विश्व रेगिस्तान का इंद्रधनुष

डा. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व ज्वाईन्ट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

श्री प्रमोद कुमार सिंघल
(*पूर्व प्राचार्य*)
कन्या महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान, भारत

VISHV REGISTAAN KA INDRADHANUSH

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights Ⓟ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-02-4
FIRST EDITION, JULY 2021, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

अख्तर खान अकेला

प्राक्कथन

'विश्व रेगिस्तान का इंद्रधनुष' नामक शीर्षक से डॉ. प्रभात कुमार सिंघल द्वारा लिखित पुस्तक संसार में पाये जाने वाले रेगिस्तानों के रंगबिरंगे परिदृश्य के साथ–साथ रेगिस्तान के इतिहास, भूगोल, जनजीवन, संस्कृति, मानव और प्रकृति के कारण हो रहे बदलावों से अवगत कराने का एक रिसर्च दस्तावेज है। विश्व के रेगिस्तानों, भारत के थार के मरुस्थल, गुजरात में कच्छ का नमक का मरुस्थल, और लद्दाख में बर्फ का ठंडा रेगिस्तान को लेकर लिखी गई यह किताब अद्‌भुत और अभिभूत करने वाली हैं। यह पुस्तक रेगिस्तानों के विविध पहलुओं का बखूबी चित्रण करती है और रेगिस्तान के बारे में जानने की ख्वाइश रखने वालो की जिज्ञासा को शांत करेगी।

प्रकृति भी अजीब है। कहीं पानी है कहीं पहाड़, कहीं समुन्द्र, कहीं जंगल हैं तो कहीं रेत–नमक और बर्फ के रेगिस्तान। प्रकृति की यही लीला है। अगर हम भूगोल के तथ्यों को देखें तो, प्रकृति के बदलते स्वरूप के चलते यह सब सदियों से हो रहा है। वैसे तो रेगिस्तान रेत के टीले और रेत के मैदानों को कहा जाता है। रेगिस्तान की चर्चा करते ही दिमाग में एक ही परिदृश्य उभरता है, मरू भूमि , मरुस्थल अर्थात ऐसी भूमि जो मर गयी है, निरुपयोगी

है, उसका कोई उपयोग नहीं है, ना कोई जिंदगी है, ना ही खेती है, एक वीरान और बजंड जगह, बस यही एक सच है। रेगिस्तान का यह सच्च आज अतीत का सपना हो कर रह गया है। प्रकृति के बदलाव, मानव के अविष्कारों एवं कुदरत के चमत्कारों से रेगिस्तान अब निर्जन नहीं रह गये हैं। आज रेगिस्तान में जिंदगियाँ हैं, खूबसूरत नजारें हैं, संस्कृति के रंग हैं और इनका अपना इतिहास और भूगोल है। आविष्कारों का परिणाम है कि निर्जन रेगिस्तान विविध प्रकार उपयोगी बन कर सोना उगल रहे हैं, और देश की अर्थव्यवस्था में अकल्पनीय योगदान दे रहें हैं। यहां तक कि अब ये क्षेत्र दुनिया भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गए हैं। दुबई आज रेगिस्तान होने पर भी खूबसूरत शहर है। अरब में रेत के ढेरों में तेल के कुएं हैं जिन्होंने अरब देशों को विश्व स्तर पर सबसे अमीर देशों का दर्जा दिया है। देश की आजादी के बाद भारत के पश्चिम में राजस्थान की पाकिस्तान से सटी सीमा पर सबसे बड़े रेगिस्तान को थार का मरुस्थल कहा जाता है भी आज रंगाबिरंगा नजर आता है।

रेगिस्तान के लिए कहावत मृग मरीचिका को तो सभी जानते हैं । तेज धूप के बवंडर में जब हवा के साथ रेत के ढेर दिखते हैं ,तो नजारा रेत के समुंद्र जैसा होता है। कहते हैं कि हिरण, जब प्यास से व्याकुल होता है, तो इस मरीचिका को जो दूर से एक समुन्द्र की तरह नजर आता है, उसे देखता है और मीलों तक पानी की उम्मीद में दौड़ता है, कुलाचे लेता है और अंत में नजदीक जाते ही यह रेत के ढेर होते हैं और फिर यह मरीचिका दूर नजर आने लगती है। कहते हैं इसी दौड़ में प्यासे मृग यानि हिरण की प्यास से मृत्यु हो जाती है। लेकिन अब हालात बदल गये है। रेगिस्तान में मरीचिका के साथ रंग बिरंगे हालात है और यहां नखलिस्तान बन गए हैं । वैज्ञानिक युग में यह सब बदल गया है। नित नए प्रयोग और अविष्कार हो रहे हैं। रेगिस्तान में नहरों और दूसरे माध्यमों से पानी पहुँचाने के प्रयास हो रहे हैं। राजस्थान में थार के

मरुस्थल में इंद्रा गांधी नहर ने यहाँ की किस्मत ही बदल दी। बाड़मेर देश का प्रमुख तेल उत्पादक केंद्र बन गया है। प्रकृति के हालातों में भी बदलाव आया हैं। राजस्थान के जो रेगिस्तानी सूखाग्रस्त हैं, वहां कई बार प्रकति की वर्षा से बाढ़ जैसे हालात का भी इतिहास बन गया है।

रेगिस्तान के सफर में ऊंट महत्वपूर्ण साथ देने वाला पशु है। इसीलिए सवारी और मालवाहक के नजरिये से ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है । ऊंट अपनी क्षमता से अधिक वजन ढोता है , ऊंटनी के दूध के रसगुल्ले एवं कई दुग्ध उत्पाद बनाये जाने लगे हैं। ऊंट के साथ गाड़ी जोड़कर यहां के लोग अपने सफर की रफ्तार तेज कर लेते हैं। ऊंट को कुदरत ने अपने पेट में काफी लम्बे समय तक के लिए पानी का स्टोर कर रखने की चमत्कारिक क्षमता दी है। राजस्थान में ऊंट को राज्य पशु का दर्जा है , जबकि इसी रेगिस्तान में रहने वाले पक्षी गोडावण को राज्य पक्षी का दर्जा और यहां पाये जाने वाले खेजड़ी पेड़ को , राज्य पेड़ का दर्जा दिया गया है । रेगिस्तान में मरु उत्सव होता है, प्रतियोगिताएं होती हैं। यहाँ खजूर ,अनार सहित कई फसलें ऐसी होती हैं जो रेगिस्तान की उपज होने स्वादिष्ट हो जाती हैं। पानी की कमी की वजह से इन क्षेत्रों में पानी को बेशकीमती मानकर मोती की तरह संजो कर रखा जाता है। एक ही पानी को दो –तीन तरीके से बचाते हुए इस्तेमाल किया जाता है। जैसे खाट पर बैठ कर नहाने और नहाने के बहते हुए पानी को नीचे एक बर्तन में स्टोरेज करके कपड़े धोने सहित अन्य उपयोग में लेने की परम्परा आज भी है। इधर लद्दाख सहित पहाड़ी बर्फ के रेगिस्तान के नजारे तो देखने लायक है जबकि कच्छ के गुजरात की सीमा वाले तक रेगिस्तान को देश ही नहीं विश्व भी जानता है। आज यह पर्यटन मानचित्र पर उभर कर आगे आया है।

राजस्थान में मरु जिला नहीं होने पर भी अजमेर जिले के पुष्कर की संस्कृति रेगिस्तानी होने से वहां पर्यटक मिनी रेगिस्तान का

आनंद लेने जाते हैं। थार के रेगिस्तान में राजस्थान के 12 जिलें शामिल हैं। मरुस्थल बनने की कहानी जितनी रोचक है उससे कहीं अधिक रोमांचक है इन जिलों का अपना इतिहास,कला–संस्कृति, जीवनशैली, चमकीली वेशभूषा, राजाओं के किले–महल, सेठों–दीवानों की खूबसूरत हवेलियां, मन्दिर,छतरियों का वैभवशाली स्वरूप है। साथ ही आजादी के बाद पानी, ऊर्जा, हिम्मत, मेहनत, लग्न, संस्कृति एकता के साथ हुए अकल्पनीय विकास ने तो यहाँ की अर्थव्यवस्था और सुविधाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन ला कर समृद्धि के नए द्वार खोल दिये हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में रेगिस्तान का आकर्षण नये गन्तव्य के रूप में जिस तेजी से उभरा है वह आश्चर्यचकित करने वाला है। यहाँ के खूबूसरत नजारों को देखकर,आनन्दित होने के लिए देश विदेश के आये पर्यटक बेसाख्ता कह उठते हैं, 'यकीनन बेहद रंगीन है रेगिस्तान, खूबूसरत जीवन से लबरेज है रेत के ये ढेर'। आज यह मरू भूमि, मरुस्थल नहीं वरण जीवन भूमि और जीवन स्थल के साथ रंगबिरंगे इंद्र धनुष बन गए हैं। किसी शायर ने क्या खूब कहा है' क्या खूब होता अगर यादें रेत होती, मुट्ठी से गिरा देते, पाँव से उड़ा देते'।

विश्व के रेगिस्तानों को आधार बनाकर पर्यटन विकास की दृष्टि से लिखित पुस्तक निश्चित ही पर्यटन विकास में सहायक सिद्ध होगी,और पाठक इन अनूठी पुस्तक का स्वागत करेंगे। लेखक को श्रमसाध्य प्रयास के लिए बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता की कामना करता हूं।

अख्तर खान अकेला
एडवोकेट एवं सोशल एक्टिविस्ट
2–थ–15, रशिदा मंजिल, मेन रोड,
विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
मो. 9829086339

लेखकीय

दुनिया के रेगिस्तान की चर्चा चलती है तो सतरंगी रंगों में नजर आते हैं रेगिस्तान। कहीं सुनहरी रेत तो कहीं भूरी, सफेद, स्लेटी तो कहीं काली रेत। कहीं शुष्क और गर्म तो कहीं बर्फ का ठंडा रेगिस्तान। रेत के ऊंचे–ऊंचे धोरे तो कहीं समतल रेत के मैदान। कहीं निर्जन तो कहीं आबाद रेगिस्तान। आबाद रेगिस्तान के लोगों का जीवन जितना कठीन हैं, उनकी जीवनशैली, रहन–सहन,वेशभूषा और संस्कृति उतनी ही रंगबिरंगी हैं। कई रेगिस्तान अपने गर्भ में खनिजों का भण्डार छुपाएं हैं। रेत में उगने वाली वनस्पति और जानवर भी पाये जाते हैं। कुछ रेगिस्तानों में नदियों की धारा,झील और झरने भी मिलते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि रेगिस्तानी इलाकों पर निरन्तर शोध होते रहते हैं और कुछ देशों ने अपने स्थाई अनुसन्धान विज्ञान केंद्र भी स्थापित किये हैं। अपने महत्व को प्रतिपादित करते रेगिस्तान जहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने की धुरी बने हैं वहीं इनके खनिज भंडारों ने विकास की नई इबारत भी लिखी है। भारत में थार का युवा रेगिस्तान विशेषकर पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तान तो इन दोनों अवधारणाओं का पर्याय बन गया है। आबादी वाले इस रेगिस्तान के लोगों के जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाने के लिए किये गये भगीरथी प्रयासों और प्रौद्योगिकी ने तो यहां का भूगोल और जीवनशैली में व्यापक बदलाव की रेखाएं खींच कर नये रंग भर दिये हैं। ऐसे ही रंगबिरंगे आयामों के खजानों को दर्शाती यह पुस्तक पाठकों को दुनिया के रेगिस्तानों की सैर कराएगी और उनके इंद्रधनुषी परिदृष्य से उल्लसित करेगी।

पुस्तक के लेखन में सर्वाधिक सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिये मैं अपने छोटे भ्राता श्री प्रमोद कुमार सिंघल भूगोल में डबल गोल्डमेडलिस्ट हैं ,भारतीय प्रशासनिक एवं राजस्थान प्रशासनिक

सेवा में चयन के लिये मार्ग दर्शन करते हैं तथा राजस्थान के राजकीय कन्या महाविद्यालय,बूंदी से प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त हुए हैं का ह्रदय के गहनतम तल से कृतज्ञता और आभार ज्ञापित करता हूं जो इस कार्य को पूर्ण करने में मील का पत्थर बने हैं। उनके ज्ञान और अनुभव का लाभ पुस्तक लेखन का महत्वपूर्ण आधार बना है।

श्री अख्तर खान 'अकेला' एडवोकेट जिनका सभी क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान है, का आभारी हूँ जिन्होंने प्राक्कथन लिख कर पुस्तक का महत्व बढ़ाया है। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग राजथान के से.नि. वरिष्ठ अधिकारी श्री प्यारे मोहन त्रिपाठी, श्री पन्ना लाल मेघवाल,डॉ. मोहन लाल गुप्ता एवं उप निदेशक डॉ. दीपक आचार्य का भी साधुवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके ज्ञान का लाभ मुझे प्राप्त हुआ।

भारतीय रेलवे में कोटा जोन के वरिष्ठ सेक्शन इंजिनियर श्री अनुज कुमार कुच्छल का भी अत्यंत आभारी हूं जिनका मार्गदर्शन और रेगिस्तान भृमण के अनुभवों का लाभ प्राप्त हुआ। अंत में विविध प्रकार सहयोग के लिये वरिष्ठ पत्रकार के.डी.अब्बासी,श्रीमती तकसीम बानो एवं पत्रकार सलीमुद्दीन काजी का भी शुक्रगुजार हूं,जिन्होंने अपना समय निकाल कर सहयोग प्रदान किया है।

इस विषय पर लिखने का विचार तब आया जब मैंने स्वयं राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों का भृमण किया और सम्पूर्ण बदलाव और संस्कृति को निकट से देखा और महसूस किया। भारत के विशेष सन्दर्भ में दुनिया के रेगिस्तानों पर लिखी यह पुस्तक पाठकों के लिए उपयोगी होगी एवं पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक बनेगी, ऐसी आशा करता हूं। पुस्तक के बारे में आपके सुझावों का स्वागत हैं। शुभकामनाओं सहित

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

अनुक्रम

(1) दुनिया के रेगिस्तानों के रंग.....1-24

(2) भारत में मनभावन रेगिस्तान थार का युवा मरुस्थल.....25-41

(3) जैसलमेर - पर्यटकों की पसन्द रेत का समंदर 42-64

(4) बाड़मेर-मरुभूमि का कमल.....65-74

(5) बीकानेर-रेत के धोरों और ऊँटों का देश 75-85

(6) जोधपुर-मरूस्थल का प्रवेश द्वार 86-95

(7) श्रीगंगानगर-मरूस्थल बना धान का कटोरा.....96-105

(8) हनुमानगढ़-सिंधु सभ्यता का केन्द्र.....106-116

(9) सीकर-कला और शौर्य की भूमि 117-130

(10) झुंझुंनू-ओपन आर्ट गैलेरी 131-146

(11) चुरू-चित्रात्मक हवेलियाँ.....147-161

(12) नागौर-मरुस्थल में मध्यकालीन वैभव 162-169

(13) पाली-जैन मंदिरों का आकर्षण 170-182

(14) जालौर-प्रकृति और धर्म का संगम.....182-191

(15) पुष्कर-मरुस्थल का मजा.....192-198

सन्दर्भ

1. Rajasthan History, Polity, Arts, Culture and Literature By Dharmendra Bhatnagar, Astha Prakashan, Jaipur, 2003.

2. Rajputana ka Itihas By J.S.Gehlot, Jodhpur

3. Related District Gazetteers, Publishes by the directorate of district Gazetteer, Govt. of Rajasthan, Jaipur.

4. Temple Of North India By Krishana Deva, National Book Trust India, New Delhi, 2005.

5. Forts and Palaces of Rajasthan by Sanjeev Kumar Bhasin, Panchsheel Prakashan, Jaipur, 2013.

6. राजस्थान जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, मोहन लाल गुप्ता, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004.

7. राजस्थान के आस्था स्थल,डॉ. प्रभात कुमार सिंघल, विदित पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2018

8. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्पराएं, प्रमोद कुमार सिंघल, कोटा, 2012.

9. अदभुत राजस्थान,डॉ. प्रभात कुमार सिंघल, प्रमोद कुमार सिंघल, साहित्यागार पब्लिकेशन, जयपुर, 2021.

10. भारत सरकार के सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा

प्रकाशित 'विज्ञान प्रसार' मासिक पत्रिकाएं।

11. भारत सरकार के भूमि संसाधन विभाग द्वारा संचालित मरु विकास कार्यक्रम वेब साईट।

12. पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित फोल्डर्स, बुकलेट एवं वेब साइट्स।

13. सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित 'सुजस' मासिक पत्रिकाएं।

14. राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखक के आलेख।

15. गूगल सर्च,विकिपीडिया एवं अन्य साइट्स।

16. लेखक द्वारा भ्रमण के निजी अनुभव।